

डॉ. डेविड एल. मैथ्यूसन, न्यू टेस्टामेंट थियोलॉजी, सत्र 27, मोक्ष, भाग 2

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डेव मैथ्यूसन द्वारा न्यू टेस्टामेंट थियोलॉजी पर व्याख्यान श्रृंखला में दिया गया है। यह सत्र 27 है, मोक्ष, भाग 2।

औचित्य के विषय पर वापस आते हुए, हमने देखा कि औचित्य की जड़ें न्याय संबंधी या धार्मिक घोषित करने के कानूनी शब्द में हैं, अर्थात्, निर्दोष होने, पाप से निर्दोष होने, दोषमुक्त होने की स्थिति होना।

इसका अर्थ यह भी है कि औचित्य सिद्ध करना, और औचित्य सिद्ध करने की भाषा परमेश्वर के भविष्य के न्याय को मानती है। यह मानती है कि परमेश्वर के लोगों को अंतिम समय के न्याय में दोषमुक्त किया जाएगा। इसलिए एक बार फिर, 1 थिस्सलुनीकियों 1:10, हम परमेश्वर के क्रोध से बच जाएंगे।

या रोमियों अध्याय 2 और पद 13 में भी, न्याय के संदर्भ में औचित्य के बारे में पौलुस की चर्चा में, अध्याय 2 और पद 13, क्योंकि परमेश्वर की दृष्टि में वे लोग धर्मी नहीं हैं जो व्यवस्था सुनते हैं, बल्कि वे लोग हैं जो व्यवस्था का पालन करते हैं जिन्हें धर्मी घोषित किया जाएगा। इसलिए औचित्य, सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण रूप से, यह मानता है कि यह परमेश्वर के भविष्य के न्याय को संदर्भित करता है, जहाँ परमेश्वर अंतिम समय के न्याय में अपने लोगों को सही ठहराएगा। और पुराने नियम में परमेश्वर की धार्मिकता के संदर्भों की पृष्ठभूमि भी है।

मैं उनमें से एक को पढ़ूँगा, उद्धार के संदर्भ में परमेश्वर की धार्मिकता, भजन अध्याय या भजन संख्या 98 - तो भजन 98 और श्लोक 2 और 3 इसका एक उदाहरण देने के लिए। मैं एक श्लोक 1 भी पढ़ूँगा।

भजन 98, 1 से 3, प्रभु के लिए एक नया गीत गाओ, क्योंकि उसने अद्भुत काम किए हैं। उसके दाहिने हाथ और उसकी पवित्र भुजा ने उसके लिए उद्धार का काम किया है। प्रभु ने अपने उद्धार को प्रकट किया है और राष्ट्रों के लिए अपनी धार्मिकता को प्रकट किया है।

उसने इस्राएल के प्रति अपने प्रेम और वफ़ादारी को याद किया है। पृथ्वी के सभी छोरों ने हमारे परमेश्वर के उद्धार को देखा है। इसलिए, परमेश्वर की धार्मिकता के प्रकटीकरण पर ध्यान दें जो प्रभु द्वारा अपने उद्धार को प्रकट करने के समानांतर है।

इसलिए, परमेश्वर की धार्मिकता को उसके लोगों के लिए उसकी उद्धारक धार्मिकता के रूप में समझा जाना चाहिए। पुराने नियम में भी इसका प्रयोग कानूनी अर्थ में किया गया है। उदाहरण के लिए, अय्यूब अध्याय 9, श्लोक 2, मैं इसे नहीं पढ़ूँगा, लेकिन यह कानूनी या फोरेंसिक अर्थ में इस्तेमाल की गई धार्मिकता या औचित्य की भाषा का एक उदाहरण है।

भजन संहिता अध्याय 51 और श्लोक 4, फिर से दूसरे भजन पर वापस जाएँ, बस यह दर्शाता है कि पुराने नियम में भी, आप पाते हैं कि धार्मिकता की भाषा का उपयोग कानूनी संदर्भ में किया जाता है। भजन संहिता 51 और श्लोक 4 में, दाऊद कहता है, तेरे विरुद्ध, मैंने केवल तेरे विरुद्ध पाप किया है और वही किया है जो तेरी दृष्टि में बुरा है, ताकि तू अपने निर्णय में सही हो और जब तू न्याय करे तो न्यायसंगत ठहरे। इसलिए, औचित्य को परमेश्वर के निर्णय के रूप में देखा जाता है, निर्दोष घोषित किए जाने का परमेश्वर का न्यायोचित निर्णय, दोषमुक्त किए जाने का।

अब, उस पृष्ठभूमि के प्रकाश में, जैसा कि हम परमेश्वर की धार्मिकता, उसकी उद्धारक धार्मिकता की पृष्ठभूमि के विरुद्ध पौलुस की औचित्य की भाषा को समझते हैं, जिसे वह अंत समय के न्याय में अपने लोगों को न्यायसंगत ठहराने के परमेश्वर के इरादे की पृष्ठभूमि के विरुद्ध लाएगा, जो कि युगांतिक न्याय की पृष्ठभूमि के विरुद्ध है, पौलुस की औचित्य की भाषा तब कहती है कि परमेश्वर के लोग पहले से ही न्यायसंगत ठहराए जा चुके हैं। उन्हें यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान के आधार पर वर्तमान में पहले से ही निर्दोष घोषित किया जा सकता है, उसका पुनरुत्थान उसका अपना औचित्य है। इसलिए, एक अर्थ में, हमारा औचित्य मसीह के अपने औचित्य के साथ जुड़ने और उसके पुनरुत्थान में उसके साथ जुड़ने के माध्यम से पूरा होता है।

लेकिन स्पष्ट रूप से, तब, निर्दोष होने, दोषमुक्त होने, सही घोषित होने, न्याय के दिन परमेश्वर के सामने निर्दोष होने का भविष्य का फैसला, क्रूस पर मसीह के कार्य और उस पर हमारे विश्वास के आधार पर वर्तमान में पहले से ही दिया जा चुका है। अर्थात्, औचित्य पहले से ही लेकिन अभी तक नहीं तनाव में भाग लेता है। अपने लोगों को निर्दोष ठहराने और उन्हें धर्मी और निर्दोष घोषित करने में परमेश्वर का भविष्य का न्याय अब मसीह की अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान में वर्तमान में वापस आ गया है, इसलिए परमेश्वर अंतिम निर्णय से पहले लोगों को निर्दोष और धार्मिक घोषित करता है।

इसलिए, भविष्य का फैसला वर्तमान में सुनाया गया है। रोमियों के अध्याय 5 और पद 19 में औचित्य को और अधिक स्पष्ट करने और परिभाषित करने में मदद करने के लिए ध्यान दें, अध्याय 5 और पद 18 और 19 में, विशेष रूप से 18 में, लेकिन मसीह और आदम के बीच तुलना में, ध्यान दें कि कैसे पौलुस फिर से औचित्य भाषा का उपयोग करता है। यह पहले से ही पहलू होगा, तथ्य यह है कि अब, मसीह में, फैसला सुनाया गया है।

लेकिन आयत 18 के अनुसार, जिस तरह एक अपराध के कारण सभी लोगों को दण्डित किया गया, उसी तरह एक धार्मिक कार्य, अर्थात् हमारे पापों के लिए मरने में मसीह की आज्ञाकारिता के कारण सभी लोगों को धर्मी ठहराया गया और जीवन मिला। इसलिए, यहाँ धर्मी ठहराए जाने को दण्ड के विपरीत माना जाता है। आयत 19, क्योंकि जैसे एक मनुष्य की अवज्ञा के कारण बहुत से लोग पापी ठहरे, वैसे ही एक मनुष्य की आज्ञाकारिता के कारण भी अब बहुत से लोग धर्मी ठहरेंगे।

इसलिए, खास तौर पर पद 19 में, धार्मिकता या औचित्य निंदा के विपरीत है। औचित्यपूर्ण होने का मतलब है निंदा न किया जाना, निर्दोष घोषित किया जाना या पाप का दोषी न होना, दोषमुक्त

होना। साथ ही, रोमियों के अध्याय 4 और पद 6 से 8 में, हम पढ़ते हैं कि दाऊद भी यही बात कहता है।

यह पौलुस आगे वर्णन करता है और समझाता है कि मसीह के द्वारा परमेश्वर के लोगों को कैसे औचित्य प्राप्त होता है। अब वह पुराने नियम का हवाला देता है और कहता है, दाऊद भी यही बात कहता है जब वह उस व्यक्ति के धन्य होने की बात करता है जिसे परमेश्वर धार्मिकता का श्रेय देता है। कर्मों के अलावा, धन्य हैं वे लोग जिनके अपराध क्षमा कर दिए गए हैं और जिनके पाप ढँक दिए गए हैं।

धन्य है वह व्यक्ति जिसके पापों को प्रभु कभी भी उसके विरुद्ध नहीं गिनेगा। दूसरे शब्दों में, फिर से, औचित्य को पापों की क्षमा के संदर्भ में समझा जाता है। अर्थात्, औचित्य का अर्थ है कि परमेश्वर हमारे विरुद्ध पापों को नहीं गिनेगा।

इसका मतलब है कि अब हम निर्दोष घोषित किए गए हैं। हम निर्दोष घोषित किए गए हैं। फिर से, निर्णायक कारक यह है कि क्रूस पर यीशु की मृत्यु ने पाप से निपटा है और पाप की क्षमा प्रदान की है, इसलिए अब इसे हमारे खिलाफ नहीं गिना जाता है। इसका मतलब है कि हम निर्दोष या निर्दोष घोषित किए गए हैं।

शायद, सुधारवादी परंपरा के भीतर, औचित्य को न केवल नकारात्मक रूप से हमारे पापों को हमारे विरुद्ध न गिने जाने के रूप में समझना बहुत आम था, बल्कि सकारात्मक रूप से मसीह की अपनी धार्मिकता को हमारे ऊपर आरोपित किया जाना भी था। जबकि नए नियम में कोई विशिष्ट ग्रंथ नहीं है जो यीशु की अपने धार्मिक जीवन के प्रति स्वयं की आज्ञाकारिता का वर्णन करता है, रोमियों के अध्याय 5 में, आदम और मसीह के बीच तुलना, वैसे, यीशु की आज्ञाकारिता के संदर्भ स्पष्ट रूप से मृत्यु की उनकी आज्ञाकारिता, क्रूस पर उनकी मृत्यु का संदर्भ है। इसलिए, हमें किसी भी एक ग्रंथ में ऐसा कोई विशिष्ट संदर्भ नहीं मिलता है जो स्पष्ट रूप से कहता हो कि यीशु का अपना धार्मिक जीवन, पृथ्वी पर अपने पूरे जीवन में उनकी अपनी आज्ञाकारिता, हमारे ऊपर आरोपित की जाती है।

साथ ही, यह अवधारणा स्पष्ट रूप से मौजूद है। तथ्य यह है कि, जैसा कि हमने देखा है, हम पहले से ही मसीह के साथ एक हैं, कि हम विश्वास में मसीह से जुड़े हुए हैं, और तथ्य यह है कि मसीह हमारा मुखिया है, यीशु मसीह ही वह है जिसने वास्तव में, उत्पत्ति 1 से, परमेश्वर ने अपने लोगों के साथ वाचा का रिश्ता बनाया है। लेकिन पाप के कारण वे वाचाएँ हमेशा टूटती रही हैं।

राजा दाऊद को भी वाचा के रिश्ते के जवाब में अपने लोगों की ओर से आज्ञाकारिता की पेशकश करनी थी। अब, कोई यह कह सकता है कि, दाऊद और सच्चे आदम के सच्चे पुत्र के रूप में, यीशु अब ऐसी आज्ञाकारिता प्रदान करता है जो किसी और के पास नहीं है। तो अब, हमारे साथ परमेश्वर का वाचा संबंध अंततः हमारे द्वारा उस व्यक्ति के साथ एकजुट होने के कारण पूरा होता है जिसने पूर्ण आज्ञाकारिता में प्रतिक्रिया दी है।

इसलिए, मुझे लगता है कि धार्मिक दृष्टि से, यीशु की आज्ञाकारिता के बारे में बात करना सही है जो हम पर आरोपित की गई है। ऐसा इसलिए नहीं है क्योंकि ऐसा कोई स्पष्ट पाठ है जो ऐसा

कहता है, बल्कि बाइबल के अनुसार, धार्मिक दृष्टि से, वाचाओं को समझने और हमारे मुखिया मसीह के साथ हमारे मिलन के संदर्भ में, उनकी आज्ञाकारिता को हमारी भी आज्ञाकारिता के रूप में देखा जा सकता है। इसलिए, यह समझना भी महत्वपूर्ण है कि औचित्य का मुख्य रूप से अर्थ हमारा परिवर्तन नहीं है।

इसका मुख्य अर्थ यह भी नहीं है कि परमेश्वर के सच्चे लोग कौन हैं या परमेश्वर के सच्चे लोग कौन हैं, यह निर्दिष्ट करना या घोषित करना। हालाँकि, निश्चित रूप से, यह एक निहितार्थ है। ये दोनों औचित्य के निहितार्थ हैं।

लेकिन खास तौर पर गलातियों और रोमियों में, और खास तौर पर बाद में, जहाँ हम पाते हैं कि औचित्य का इस्तेमाल इस संदर्भ में किया गया है कि परमेश्वर के सच्चे लोग कौन हैं, यह समझना महत्वपूर्ण है कि इसका मतलब यह नहीं है, हालाँकि यह इसके निहितार्थ और संदर्भ का हिस्सा है। बल्कि, यह एक प्राथमिक फोरेसिक शब्द है। यह परमेश्वर के अंतिम समय के फैसले को संदर्भित करता है जिसमें दोषी न होने, बरी होने और सही होने की स्थिति के बारे में बताया गया है, जिसे अब वर्तमान में सुनाया गया है।

वह अंतिम समय का फैसला अब यीशु मसीह और पापों के लिए क्रूस पर उनकी मृत्यु पर उनके विश्वास के आधार पर विश्वासियों पर वर्तमान में पहुंच गया है। अब, जैसा कि हमने पहले रोमियों अध्याय 3 पर चर्चा करते हुए पहले ही उल्लेख किया है, आम तौर पर, किसी न्यायाधीश द्वारा किसी ऐसे व्यक्ति को निर्दोष घोषित करना न्याय का उल्लंघन होगा जो वास्तव में दोषी है। यदि आप कभी टीवी पर देखते हैं या किसी ऐसे न्यायालय का हिस्सा होते हैं जहाँ आपने किसी ऐसे व्यक्ति को निर्दोष घोषित होते देखा है जिसे आप जानते हैं और जिसके बारे में सभी जानते हैं कि वह दोषी है, तो यह एक शोर मचाएगा।

हम अन्याय का रोना रोएँगे। हम रोएँगे कि यह अनुचित है क्योंकि अगर किसी व्यक्ति के साथ ऐसा व्यवहार किया जाता है कि वह पाप का दोषी है और उसे उस पाप का दोषी या निर्दोष नहीं माना जाता है, तो न्याय का उल्लंघन होता है। इसलिए, हम नए नियम में जो पाते हैं वह सामान्य रूप से न्याय का उल्लंघन होता है, वास्तव में, न्याय का उल्लंघन नहीं है क्योंकि हम रोमियों अध्याय 3 और श्लोक 25 और 26 में देखते हैं कि परमेश्वर धर्मी घोषित करता है।

परमेश्वर अपने स्वयं के न्याय का उल्लंघन किए बिना पापियों को उचित ठहरा सकता है। जैसा कि पौलुस स्वयं पद 26 में कहता है, उसने, अर्थात् परमेश्वर ने, वर्तमान समय में अपनी धार्मिकता को प्रदर्शित करने के लिए ऐसा किया ताकि वह न्यायी हो और वह उन पापियों को उचित ठहराए जो यीशु मसीह में विश्वास करते हैं। तो, मुख्य बात यह है कि जो इसे न्याय का उल्लंघन होने से बचाता है, वह यह है कि परमेश्वर उन लोगों को दोषी नहीं घोषित करता है जो पापी हैं। जो इसे न्याय का उल्लंघन होने से बचाता है वह यह है कि परमेश्वर ने यीशु मसीह के व्यक्तित्व में पापों से निपटने के द्वारा अपने स्वयं के न्याय का उल्लंघन किए बिना ऐसा किया है।

यीशु मसीह को प्रायश्चित के रूप में, पापों के लिए बलिदान के रूप में, क्रूस पर यीशु मसीह की मृत्यु के आधार पर पापों के लिए प्रायश्चित के रूप में अर्पित करके, परमेश्वर लोगों को उनके पापों

के संदर्भ में धर्मों और निर्दोष घोषित कर सकता है, क्योंकि उसने यीशु मसीह के व्यक्तित्व में और क्रूस पर यीशु मसीह की मृत्यु के आधार पर पापों के साथ न्यायपूर्ण तरीके से व्यवहार किया है। इसलिए, औचित्य हमारे उद्धार के संदर्भ में एक महत्वपूर्ण बाइबिल धर्मशास्त्रीय अवधारणा है, और यह एक ऐसा शब्द है जो इंगित करता है कि अपने लोगों को निर्दोष घोषित करने, उन्हें सही ठहराने, उन्हें सही घोषित करने, धार्मिकता की स्थिति देने का परमेश्वर का भविष्य का न्याय अब वर्तमान में वापस आ गया है ताकि पुरुषों और महिलाओं को अब धर्मों घोषित किया जा सके, उन्हें उचित ठहराया जा सके, निर्दोष घोषित किया जा सके, दोषी नहीं ठहराया जा सके, दोषमुक्त किया जा सके, वर्तमान में यीशु मसीह और क्रूस पर उनकी मृत्यु पर आधारित पाप से बरी किया जा सके। औचित्य से संबंधित सामंजस्य का विषय भी है।

मेल-मिलाप की भाषा रिश्तों की भाषा की याद दिलाती है; यानी यह एक संबंधपरक शब्द है। मेल-मिलाप मूल रूप से दो पक्षों को संदर्भित करता है जो एक दूसरे से असहमत हैं, एक दूसरे से दुश्मनी रखते हैं, और उन दोनों के बीच रिश्ता टूट चुका है, लेकिन अब वह रिश्ता फिर से जुड़ गया है। दुश्मनी अब दूर हो गई है, और रिश्ता फिर से जुड़ गया है।

अब, यह रिश्ता शत्रुतापूर्ण नहीं बल्कि शांतिपूर्ण है। मूल रूप से मेल-मिलाप का यही अर्थ है। रोमियों के अध्याय 5 में, हम पाते हैं कि मेल-मिलाप औचित्य से भी संबंधित है।

पौलुस अध्याय 5 और पद 1 में कहता है, इसलिए, चूंकि हम विश्वास के द्वारा धर्मों ठहराए गए हैं, जैसा कि पौलुस ने पहले चार अध्यायों में तर्क दिया है, इसलिए हमारे पास परमेश्वर के साथ शांति है। यह मेल-मिलाप की भाषा है। यानी, अब परमेश्वर और उसके लोगों के बीच का रिश्ता बहाल हो गया है।

जो पहले शत्रुता और दुश्मनी का था, कम से कम हमारे हिस्से में तो था, लेकिन हमें स्वभाव से क्रोध की संतान भी कहा जाता है, जो परमेश्वर के क्रोध और उसके न्याय के पात्र हैं। अब, उस रिश्ते को सुधारा गया है और शत्रुतापूर्ण के बजाय शांतिपूर्ण बनाया गया है। जैसा कि रोमियों अध्याय 5 अध्याय 5 और श्लोक 10 में आगे कहा गया है, क्योंकि जब हम परमेश्वर के शत्रु थे।

तो पहले हम परमेश्वर के शत्रु थे, लेकिन अब, पद 10 में, उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हम उसके साथ मेल-मिलाप कर चुके हैं। तो, हम पहले परमेश्वर के शत्रु थे, लेकिन अब हमारे पास परमेश्वर के साथ शांति है। अध्याय 5, पद 1, अर्थात्, अब हम परमेश्वर के साथ एक सही रिश्ते में वापस मेल-मिलाप कर चुके हैं।

यह पद 9 और 10 में, विशेष रूप से पद 10 में, यीशु मसीह की मृत्यु के द्वारा स्पष्ट रूप से पूरा किया गया है, क्योंकि जब हम परमेश्वर के शत्रु थे, तब हम उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा उसके साथ मेल-मिलाप कर चुके थे। इसलिए, मसीह की मृत्यु को उस समस्या का समाधान करने के रूप में देखा जाता है जिसने पहली जगह शत्रुता को जन्म दिया, और वह है मानवीय पाप।

अब, पाप से निपटने और उस शत्रुता को दूर करने के द्वारा, हम फिर से एक शांतिपूर्ण रिश्ते में प्रवेश कर सकते हैं, परमेश्वर के साथ शांति, शत्रुता या उसके शत्रु होने के बजाय। यह तब होता है

जब मसीह उस बाधा को हटा देता है जो परमेश्वर और उसके लोगों के बीच के रिश्ते में दरार पैदा करती है। और जैसा कि रोमियों 5 स्पष्ट करता है, यह एक तरह का दो-पक्षीय समझौता नहीं है जहाँ दो पक्ष एक साथ आते हैं और शर्तों पर सहमत होते हैं।

ईश्वर ही एकमात्र ऐसा व्यक्ति है जो पहल करता है। ईश्वर ही वह व्यक्ति है जो लोगों को अपने साथ मिलाने की पहल करता है और उस मेल-मिलाप को लाने के लिए अपने पुत्र, यीशु मसीह को भेजता है। हम 2 कुरिन्थियों में भी ऐसी ही भाषा पाते हैं, जो मेल-मिलाप के नए नियम के धार्मिक विषय से निपटने वाला एक महत्वपूर्ण पाठ है।

और यह 2 कुरिन्थियों के अध्याय 5 और विशेष रूप से आयत 18 से 21 में है। आयत 18, यह सब परमेश्वर की ओर से है। यह तथ्य कि अब हम एक नई सृष्टि के सदस्य हैं, कि हम मसीह में हैं, यह सब परमेश्वर की ओर से है, जिसने हमें अपने साथ मिला लिया है।

तो, फिर से ध्यान दें कि परमेश्वर मसीह के माध्यम से अपने लोगों को अपने साथ मिलाने की पहल करता है और हमें मेल-मिलाप की सेवकाई देता है, कि परमेश्वर मसीह में दुनिया को अपने साथ मिला रहा था, लोगों के पापों को उनके विरुद्ध नहीं गिन रहा था। इसलिए, पौलुस आगे परिभाषित करता है कि मेल-मिलाप का क्या अर्थ है या यह कैसे होता है। यह लोगों के पापों को उनके विरुद्ध न गिनने के द्वारा होता है।

और उसने हमें मेल-मिलाप का यह संदेश सौंपा है। इसलिए, हम मसीह के राजदूत हैं, मानो परमेश्वर हमारे माध्यम से अपनी अपील कर रहा हो। हम मसीह की ओर से आपसे विनती करते हैं कि आप परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप कर लें।

और परमेश्वर ने उसे, यीशु मसीह को, जो पाप से रहित था, हमारे लिए पाप बना दिया ताकि हम परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ। तो एक बार फिर, रोमियों अध्याय 5 के संबंध में इस पाठ में पाए जाने वाले समान विषयों पर ध्यान दें। सबसे पहले, परमेश्वर से अलगाव की धारणा। दूसरा, बहाल किया गया संबंध यह है कि हम परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप कर लेते हैं।

अब, शत्रुता का रिश्ता, एक ऐसा रिश्ता जो टूट गया था, उसे शांतिपूर्ण रूप से बहाल कर दिया गया है। और फिर, अंततः, क्रूस पर मसीह की मृत्यु ने इसे पूरा किया। तो फिर से, अध्याय 5 और श्लोक 19 में, इसका मतलब है कि हमारे पापों को हमारे खिलाफ नहीं गिनना।

पाप से निपटना ही रिश्ते में दरार पैदा करता है। मैं यह भी चाहता हूँ कि आप ध्यान दें कि 2 कुरिन्थियों 5 में मेल-मिलाप अध्याय 5 और पद 17 में नई सृष्टि से जुड़ा है, जो पद 18 से 20 के ठीक पहले है जिसे हम पढ़ते हैं। इसलिए, यदि कोई नया मसीह है, तो नई सृष्टि आ गई है, पुरानी चली गई है, और नई यहाँ है।

दूसरे शब्दों में, ऐसा प्रतीत होता है कि मेल-मिलाप एक नई सृष्टि के उद्घाटन का हिस्सा है। वास्तव में, ग्रेग बील ने भी कुछ लेखों में, लेकिन अपनी न्यू टेस्टामेंट थियोलॉजी पुस्तक में, तर्क दिया है कि मेल-मिलाप पुराने नियम से नई सृष्टि के उद्घाटन किए गए अंतिम समय के वादों का हिस्सा है। उदाहरण के लिए, वह यशायाह अध्याय 65 की ओर इशारा करते हैं, जो 2 कुरिन्थियों

5.17 में यशायाह 65 का स्पष्ट संकेत है जिसे हमने अभी पढ़ा और जिसे हमने सृष्टि और नई सृष्टि की अपनी चर्चा में निपटाया।

यशायाह अध्याय 65 संभवतः 2 कुरिन्थियों 5:17 में मसीह में होने के कारण पूरा हो रहा है, जो कि पद 15 में मृतकों में से जी उठा था। अब मसीह से संबंधित होने के कारण, यदि कोई मसीह में है, तो हम अब एक नई सृष्टि के सदस्य हैं। अब एक नई सृष्टि है जिसका उद्घाटन मसीह में हुआ है।

लेकिन जैसा कि बील तर्क देते हैं, यशायाह के पुनर्स्थापना के दर्शन की पूर्ति का एक हिस्सा परमेश्वर और भूमि में रहने वाले उसके लोगों के बीच शांतिपूर्ण संबंध है। इसलिए, उत्पत्ति अध्याय 3 में पतन और पाप के कारण उत्पन्न अलगाव अब एक नई सृष्टि में परमेश्वर और उसके लोगों के बीच पुनर्स्थापना द्वारा बहाल और उलटा होना शुरू हो रहा है। इसलिए बील तर्क देते हैं कि 2 कुरिन्थियों 5 में सुलह अंततः एक नई सृष्टि की स्थापना के यशायाह में परमेश्वर के वादों पर वापस जाती है।

अब जबकि नई सृष्टि का उद्घाटन हो चुका है, परमेश्वर और उसके लोगों के बीच शांतिपूर्ण संबंध का भी उद्घाटन हो चुका है। यह मेल-मिलाप के संदर्भ में है। अपने नए नियम के धर्मशास्त्र से बील को उद्धृत करते हुए, वह कहते हैं कि मसीह में मेल-मिलाप, निर्वासन के अलगाव से बहाली के यशायाह के वादों को समझाने का पॉल का तरीका है।

निर्वासन से मुक्ति के वादे मसीह में पापों के प्रायश्चित और क्षमा के द्वारा पूरे होने लगे हैं। इसलिए फिर से, मसीह में मेलमिलाप पौलुस का यह समझाने का तरीका है कि निर्वासन से मुक्ति के यशायाह के वादे मसीह में पापों के प्रायश्चित और क्षमा के द्वारा पहले से ही पूरे होने लगे हैं। इसलिए, क्रूस पर मसीह की मृत्यु ने परमेश्वर और उसके लोगों के बीच के अलगाव को दूर कर दिया है।

उनकी मृत्यु उस बात से संबंधित है जिसने परमेश्वर के लोगों और परमेश्वर के बीच, मानवता और परमेश्वर के बीच दरार और शत्रुता और दुश्मनी पैदा की, और वह पाप है। और अब, उनके पापों को उनके विरुद्ध न गिनने के द्वारा, पद 19, परमेश्वर ने एक नए सृजनात्मक कार्य में, एक नई सृष्टि का उद्घाटन करके, और अब नई सृष्टि के जीवन की स्थापना और उद्घाटन करके, जो परमेश्वर और उसके लोगों के बीच एक मेल-मिलाप है, मानवता को अपने साथ मिला लिया है। दूसरा पाठ जहाँ हम पाते हैं कि मेल-मिलाप एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, वह है इफिसियों अध्याय 2, और विशेष रूप से पद 13 से 17।

मैं पद 13 को पढ़कर शुरू करूँगा, लेकिन अब मसीह में, तुम जो कभी दूर थे, मसीह के लहू के द्वारा निकट लाए गए हो। फिर से, यह मेल-मिलाप की भाषा है। इस पद में मेल-मिलाप या सुलह शब्द का इस्तेमाल नहीं किया गया है, लेकिन अलग होने का यह विचार, अगर मैं वापस आकर पद 12 को पढ़ सकता हूँ, तो याद रखिए कि उस समय तुम मसीह से अलग थे, इस्राएल से बहिष्कृत थे, और इस दुनिया में बिना किसी आशा और बिना ईश्वर के थे।

और अब, पद 13, जो दूर थे वे मसीह के लहू के द्वारा निकट लाए गए हैं। यह मेलमिलाप की भाषा है। क्योंकि वह स्वयं, अर्थात् मसीह, हमारी शांति है।

मेलमिलाप की और अधिक भाषा। जिसने दो समूहों, यहूदी और गैरयहूदी को एक कर दिया है, और शत्रुता की दीवार, बाधा को नष्ट कर दिया है - मेलमिलाप की और अधिक भाषा।

इसलिए, शत्रुता के रिश्ते की जगह शांतिपूर्ण रिश्ते ने ले ली है। अपने शरीर में व्यवस्था और उसकी आज्ञाओं और नियमों को अलग करके, उसका उद्देश्य अपने अंदर दोनों में से एक नई मानवता बनाना था, इस प्रकार शांति स्थापित करना। फिर से, शांति की भाषा पर ध्यान दें।

और एक शरीर में उन दोनों को, यहूदी और गैर-यहूदी को, क्रूस के द्वारा परमेश्वर से मिलाप कराने के लिए, जिसके द्वारा उसने उनकी शत्रुता को नाश किया। उसने आकर तुम्हें जो दूर हो, शांति का उपदेश दिया और उन्हें जो निकट हो, शांति का, क्योंकि उसके द्वारा हम दोनों एक आत्मा के द्वारा पिता के पास पहुँच सकते हैं। फिर से, सभी मेल-मिलाप की भाषा पर ध्यान दें, लेकिन यह भी ध्यान दें कि इफिसियों में, हम एक दोहरा मेल-मिलाप पाते हैं।

सबसे पहले, हम ईश्वर और मानवता के बीच सामंजस्य पाते हैं। इसलिए एक बार फिर, अन्यजातियों को मसीह से अलग बताया गया है; उन्हें ईश्वर से बहिष्कृत, इस दुनिया में ईश्वर के बिना बताया गया है, लेकिन अब उन्हें यीशु मसीह के लहू के द्वारा निकट लाया गया है। साथ ही, हम पाते हैं कि पद 16 में ईश्वर का इरादा उन दोनों, यहूदी और अन्यजातियों को क्रूस के माध्यम से ईश्वर के साथ मिलाना है।

तो एक बार फिर, यहूदी और गैर-यहूदी दोनों का वर्णन किया गया है, यह माना जाता है कि उन दोनों को परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप करने की आवश्यकता है। उस पाप ने भाषा में, रिश्ते में दरार पैदा कर दी है, इसलिए अब, मसीह की मृत्यु के माध्यम से, परमेश्वर उन्हें अपने साथ मिलाता है, एक नई मानवता का निर्माण करता है। हालाँकि, हमें ध्यान देना चाहिए कि मेल-मिलाप केवल मानवता और परमेश्वर के बीच ही नहीं है, बल्कि मानवता और मानवता के बीच भी है।

इसलिए पौलुस दो अलग-अलग समूहों, यहूदी और गैर-यहूदी का वर्णन कर रहा है, जिसके बारे में वह कह सकता है कि वे एक-दूसरे के प्रति शत्रुतापूर्ण थे, कि गैर-यहूदी इस्राएल की नागरिकता से बाहर रखे गए थे, वे एक-दूसरे के साथ शत्रुता में थे, और कानून ने दोनों के बीच एक बाधा प्रदान की। लेकिन अब फिर से, यीशु मसीह की मृत्यु के माध्यम से, उसने शत्रुता को दूर कर दिया है और उनके बीच शांति ला दी है, ताकि अब वह उन्हें एक नए मनुष्य में बना सके। तो फिर से, इफिसियों में दो स्तरों पर मेल-मिलाप होता है।

यहूदी और गैर-यहूदी के बीच एक शरीर में मेल-मिलाप, मसीह की मृत्यु के माध्यम से उनके बीच की शत्रुता को दूर करना, लेकिन यहूदी और गैर-यहूदी और स्वयं परमेश्वर के बीच मेल-मिलाप। इसलिए, फिर से, शांति बनाना, शांतिपूर्ण संबंध लाना, या पाप के कारण शत्रुता द्वारा औपचारिक रूप से चिह्नित संबंध की बहाली। कुलुस्सियों के अध्याय एक और श्लोक 21 और 22 भी श्लोक

15 से 21 में प्रसिद्ध मसीह भजन के बाद मेल-मिलाप की भाषा के साथ प्रतिध्वनित होते हैं, जो क्रूस पर बहाए गए अपने लहू के माध्यम से शांति बनाकर स्वर्ग और पृथ्वी पर सभी चीजों को अपने साथ मिलाने के परमेश्वर के इरादे के संदर्भ के साथ समाप्त होता है, अध्याय एक, श्लोक 20।

अब पौलुस इसे अपने पाठकों पर लागू करने जा रहा है और पद एक से शुरू करता है, एक बार जब आप परमेश्वर से अलग हो गए थे और अपने मन में शत्रु थे। इसलिए, अपने बुरे व्यवहार के कारण अलगाव, शत्रुता और दुश्मनी की भाषा पर ध्यान दें। लेकिन अब, पद 22 में, परमेश्वर ने, उसने, परमेश्वर ने आपको मृत्यु के माध्यम से मसीह के भौतिक शरीर के साथ मिला लिया है ताकि आपको उसकी दृष्टि में पवित्र और दोष से मुक्त करके प्रस्तुत करे।

इसलिए एक बार फिर, शत्रुता और अलगाव के रिश्ते को अब बहाल शांतिपूर्ण रिश्ते से बदल दिया गया है। और फिर से, पूरा संदर्भ एक अव्यवस्था और अलगाव को मानता है जो पाप के कारण हुआ था जिसे अब यीशु मसीह की मृत्यु के द्वारा निपटाया गया है। निहित रूप से, हम यह भी निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि प्रकाशितवाक्य 21 और 22 इस भविष्य के मेल-मिलाप का अभी तक नहीं हुआ आयाम है, इस तथ्य को देखते हुए कि हम विशेष रूप से इफिसियों 2 जैसे पाठ में जो पाते हैं वह अब प्रकाशितवाक्य 21 और 22 की नई रचना में एक वास्तविकता प्रतीत होता है।

इसलिए, एक अर्थ में, हम कह सकते हैं कि प्रकाशितवाक्य 21 और 22, और मैं उन्हें नहीं पढ़ूंगा, अभी भी भविष्य के मेल-मिलाप का हिस्सा नहीं है। अर्थात्, अब सारी मानवता एक दूसरे के साथ, यहूदी और गैर-यहूदी के साथ, और एक नई सृष्टि में परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप में रह रही है, जिसमें परमेश्वर उनके बीच निवास करता है। इसलिए यद्यपि मेल-मिलाप शब्द का उपयोग प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 और 22 में नहीं किया गया है, परमेश्वर का अपने लोगों के साथ बेरोकटोक पहुँच के साथ रहना और एक नई पृथ्वी पर अपने लोगों के साथ उसकी अप्रतिबंधित उपस्थिति निश्चित रूप से मेल-मिलाप की अवधारणा को ग्रहण करती है जिसे हमने अब तक पौलुस के पत्रों में देखा है।

उम्मीद है कि आपने मेल-मिलाप और औचित्य के बीच के संबंध को देखा होगा और यह कि परमेश्वर ने पाप से निपटा है ताकि हम अब सही स्थिति में प्रवेश कर सकें और परमेश्वर के साथ सही संबंध बना सकें। इसलिए, मेल-मिलाप और औचित्य को एक तरह से दो रूपों के रूप में देखा जा सकता है जो परमेश्वर के साथ सही संबंध में खड़े होने और हमारे पापों को क्षमा किए जाने और हमारे पापों से निपटाए जाने की एक ही वास्तविकता को संदर्भित करते हैं जो परमेश्वर के साथ हमारे संबंध में दरार या बाधा का कारण बनते हैं। इसलिए, हमने उद्धार के विषय को अपने लोगों को बचाने और उन्हें उद्धार के आशीर्वाद का संचार करने के परमेश्वर के इरादे के व्यापक विषय के रूप में देखा है।

हमने परमेश्वर के लोगों के चुनाव के विषय पर विचार किया है। परमेश्वर ने अपने लोगों को चुनकर, उन्हें अपने लोगों के रूप में चुनकर, तथा उन्हें अस्तित्व में लाकर तथा एक लोगों का निर्माण करके अपने अनुग्रहपूर्ण कार्य का सुझाव देकर उनके साथ एक सम्बन्ध की शुरुआत की

है। हमने वादा किए गए नए वाचा की पूर्ति के भाग के रूप में पापों की क्षमा के विषय पर विचार किया है।

छुटकारे का विषय बाज़ार की भाषा है, लेकिन यह पलायन की भाषा भी है कि परमेश्वर ने अब अपने लोगों को मुक्त और छुड़ाया है। उसने अपने बेटे, यीशु मसीह की मृत्यु की कीमत के माध्यम से उन्हें पाप के बंधन से मुक्त और मुक्त किया है। फिर, औचित्य, कानूनी भाषा है, जहाँ परमेश्वर अपने लोगों को दोषी नहीं घोषित करता है।

वह उन्हें सही साबित करता है और उन्हें अपने सामने सही स्थिति में घोषित करता है ताकि औचित्य का अंतिम समय का फैसला अब यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान के आधार पर वर्तमान में पहुँच गया है। और फिर मेल-मिलाप, एक संबंधपरक शब्द जहाँ शत्रुता का शत्रुतापूर्ण संबंध अब हटा दिया गया है और शांति के संबंध के लिए बदल दिया गया है, एक मेल-मिलाप वाला संबंध जहाँ फिर से हमारे पाप, जिसने पहली जगह में दरार पैदा की थी, का निपटारा किया गया है और यीशु मसीह की मृत्यु में हटा दिया गया है। चर्चा करने के लिए अगला विषय पुत्रत्व और दत्तक ग्रहण होगा।

पुराने नियम में, इस्राएल को परमेश्वर के पुत्र के रूप में अपनाया गया था, विशेष रूप से निर्गमन में। निर्गमन अध्याय 4 और श्लोक 22 में, मुझे लगता है कि यह वह पाठ है जो हमें चाहिए। निर्गमन अध्याय 4, श्लोक 22, फिर फिरौन से कहता है, यह वही है जो प्रभु कहता है, इस्राएल मेरा ज्येष्ठ पुत्र है।

और मैंने तुमसे कहा, मेरे बेटे को जाने दो ताकि वह मेरी आराधना करे। इसलिए, इस्राएल और फिर, लेकिन तुम उसे जाने से मना करते हो। इसलिए, मैं तुम्हारे ज्येष्ठ पुत्र फिरौन को मार डालूँगा।

इसलिए, इस्राएल को परमेश्वर के पुत्र, परमेश्वर के ज्येष्ठ पुत्र, एक पुत्र, एक पुत्र के रूप में देखा जाता है जिसे परमेश्वर अपने लोगों के रूप में अपनाता है। हमने देखा कि परमेश्वर के चुने हुए लोग, उसके चुने हुए प्रिय लोग। अब, पुत्रत्व और गोद लेने की यह भाषा परमेश्वर के नए लोगों, कलीसिया पर लागू होती है।

यह भी ध्यान रखना ज़रूरी है कि गोद लेना ग्रीको-रोमन दुनिया के लिए भी एक रूपक था। इसलिए, पुत्रत्व और गोद लेने की भाषा का उपयोग करके, मुझे यकीन है कि गैर-यहूदी पाठक भी इससे जुड़े होंगे। लेकिन पौलुस भी ऐसी भाषा का उपयोग करता है जो परमेश्वर द्वारा इस्राएल को अपने पुत्र के रूप में गोद लेने के संबंध में पुराने नियम से सीधे आती है।

तो अब, नए नियम में, हम पाते हैं कि उद्धार परमेश्वर द्वारा अपने बच्चों को गोद लेने के रूप में है, जैसे कि उसके लोग उसके बच्चे हों। रोमियों का आठवाँ अध्याय एक महत्वपूर्ण पाठ है जो हमारे उद्धार को गोद लेने या परमेश्वर द्वारा अपने लोगों को गोद लेने, परमेश्वर द्वारा हमें अपने पुत्र के रूप में गोद लेने के रूप में वर्णित करता है। इसलिए, अध्याय आठ और श्लोक 14 में, जो लोग परमेश्वर की आत्मा के द्वारा निर्देशित होते हैं, वे परमेश्वर के बच्चे हैं।

जो आत्मा तुम्हें मिली है वह तुम्हें दास नहीं बनाती ताकि तुम फिर से डर में जी सको; बल्कि जो आत्मा तुम्हें मिली है वह तुम्हें पुत्रत्व के लिए गोद लेने के लिए लाती है। और उसके द्वारा हम पुकारते हैं, हे अब्बा पिता। आत्मा स्वयं हमारी आत्मा के साथ गवाही देती है कि हम परमेश्वर की संतान हैं।

फिर से, रोमियों 8 निर्गमन के संदर्भ में है। इसलिए परमेश्वर ने अपने लोगों को पहले निर्गमन में दासता से छुड़ाया और उन्हें अपने लोगों के रूप में अपनाया; अब हम इसे परमेश्वर के नए लोगों पर लागू होते हुए पाते हैं, जहाँ परमेश्वर अपने लोगों को पाप की दासता से छुड़ाता है और अब उन्हें अपने बच्चों के रूप में अपनाता है। और यह आत्मा के उंडेले जाने से पुष्टि होती है।

वास्तव में, पॉल कहते हैं कि यह आत्मा द्वारा पूरा किया जाता है, परमेश्वर द्वारा हमें आत्मा दिए जाने से, लेकिन यह हमारे हृदय में डाली गई आत्मा द्वारा भी पुष्टि की जाती है जो हमें अब्बा पिता पुकारने की अनुमति देती है। गलातियों के अध्याय तीन और श्लोक 24 से 25 में भी निर्गमन के संदर्भ में एक बार फिर दत्तक ग्रहण की भाषा और पुत्रत्व की भाषा मिलती है। इसलिए, परमेश्वर के बच्चे, परमेश्वर के पुत्र, परमेश्वर के दत्तक पुत्र या बच्चे होने की यह भाषा केवल नए नियम की भाषा नहीं है जिसे पॉल ने आविष्कार किया है या उपयोग करने का निर्णय लिया है या जो उसे विशिष्ट रूप से प्रकट की गई है, बल्कि यह वह भाषा है जो पुराने नियम से सीधे आती है।

परमेश्वर का अपने लोगों, इस्राएल के साथ सम्बन्ध, विशेष रूप से निर्गमन में। इसलिए, गलातियों की पुस्तक के अध्याय 3, श्लोक 24, और 25 में, इस विश्वास के आने से पहले, हमें व्यवस्था के अधीन हिरासत में रखा गया था, जब तक कि यीशु मसीह में आने वाला विश्वास प्रकट नहीं हो जाता। इसलिए, व्यवस्था मसीह के आने तक हमारा संरक्षक थी ताकि हम विश्वास के द्वारा धर्मो ठहरें।

अब जबकि आस्था आ गई है, हम अब किसी संरक्षक के अधीन नहीं हैं। अध्याय चार, एक से सात तक जाने के बजाय, मैं यह कह रहा हूँ कि जब तक कोई वारिस नाबालिग है, तब तक वह गुलाम से अलग नहीं है, हालाँकि वह पूरी संपत्ति का मालिक है। वारिस पिता द्वारा निर्धारित समय तक अभिभावकों और ट्रस्टियों के अधीन रहता है।

इसी तरह, जब हम नाबालिग थे, हम दुनिया की मौलिक आध्यात्मिक शक्तियों के अधीन गुलामी में थे। इसलिए, मसीह के आने से पहले इस भाषा पर ध्यान दें, लोगों को गुलामों के रूप में देखा जाता है, नाबालिगों के समान, कम उम्र के होने के कारण, लेकिन पद 13, पद चार, लेकिन जब निर्धारित समय पूरा हो गया, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को एक स्त्री से जन्मा, जो व्यवस्था के अधीन पैदा हुआ, व्यवस्था के अधीन लोगों को छुड़ाने के लिए भेजा ताकि हम पुत्रत्व के लिए दत्तक पुत्रत्व प्राप्त कर सकें। क्योंकि तुम उसके पुत्र हो, अब नाबालिगों या नाबालिगों को पसंद नहीं करते, लेकिन अब जब तुम पुत्र हो, यानी पूर्ण विकसित पुत्र और वारिस; क्योंकि तुम पुत्र हो, परमेश्वर ने अपनी आत्मा, अपने पुत्र की आत्मा, हमारे हृदयों में भेजी, वह आत्मा जो अब्बा पिता को पुकारती है।

तो, अब आप दास नहीं बल्कि परमेश्वर के बच्चे हैं। और चूँकि आप उसके बच्चे हैं, इसलिए परमेश्वर ने आपको वारिस भी बनाया है। अब, फिर से ध्यान दें कि यह निर्गमन के संदर्भ में है।

वह ईश्वर है। मसीह के आने के साथ, ईश्वर के लोग अब एक तरह से वयस्क पुत्रों की स्थिति में पहुँच गए हैं जो अब अपनी विरासत के अधिकारी हो सकते हैं। पॉल मूल रूप से कह रहे हैं कि व्यवस्था के अधीन जीवन एक अभिभावक या यहाँ तक कि एक शिक्षक, एक तरह की दाई या एक चाइल्डमाइंडर के अधीन होने के समान था। लेकिन अब, मसीह के आने के साथ, हम पूर्ण रूप से ईश्वर के दत्तक पुत्र और पुत्रियाँ हैं।

एक नए निर्गमन में, परमेश्वर ने हमें छुड़ाया है। परमेश्वर ने अपने लोगों को व्यवस्था के अधीन से छुड़ाया है और अब हमें अपना दत्तक पुत्र बनाया है। और एक बार फिर, जैसा कि हमने रोमियों आठ में देखा, उन पर अपनी आत्मा उंडेल कर इसकी पुष्टि करें।

इफिसियों के अध्याय एक की आयत पाँच में, परमेश्वर ने अपने नए लोगों पर जो आशीषें बरसाई हैं, उनमें से एक आशीष आयत पाँच में पाई जाती है। उसने अपनी इच्छा और इच्छा के अनुसार मसीह के द्वारा हमें पुत्रत्व के लिए गोद लेने के लिए पहले से ही नियत कर लिया है। इसलिए, परमेश्वर की संतान के रूप में, हम परमेश्वर के सच्चे लोग हैं जिन्हें उसने गोद लिया है और उद्धार की आशीषों के वारिस हैं जिसका वादा उसने पुराने नियम में किया था, जो अब यीशु मसीह के व्यक्तित्व में पूरा हुआ है।

इसलिए, परमेश्वर के लोगों, इस्राएल की तरह, परमेश्वर ने एक बार फिर, एक नए निर्गमन में, अपने लोगों को पाप की गुलामी से छुड़ाया, उन्हें अपना पुत्र बनाया, उन्हें अपने पुत्रों के रूप में अपनाया, और उसके कारण, अब हमारे पास विरासत है। हम पुराने नियम में दिए गए उद्धार के आशीर्वाद को विरासत में पाते हैं और अब यीशु मसीह के व्यक्तित्व में पूर्ण हो गए हैं। इसलिए पुत्रत्व और दत्तक ग्रहण नए नियम के महत्वपूर्ण विषय हैं जो पुराने नियम की पूर्ति के संदर्भ में एक बार फिर हमारे उद्धार का वर्णन करते हैं।

ईश्वर द्वारा प्रदान किए गए उद्धार के अंतर्गत आने वाला एक और शब्द है पवित्रीकरण। पुराने और नए नियम में शब्दों के एक समूह का अंग्रेजी अनुवाद जो वास्तव में पंथ संबंधी शब्द या धार्मिक शब्द हैं जो शुद्धता और पवित्रता के क्षेत्र से संबंधित हैं। पवित्रीकरण का विचार पवित्र होने, अलग होने या अपने मूल स्तर पर पवित्र होने का सुझाव देता है।

यह उस चीज़ को संदर्भित करता है जिसे अलग रखा गया है या पवित्र है। हम इसे पहले से ही इसमें भाग लेते हुए देखेंगे, लेकिन इसे अभी तक आयाम नहीं दिया गया है। उदाहरण के लिए, 1 कुरिन्थियों अध्याय 1 और 2 में, हम पाते हैं कि 1 कुरिन्थियों अध्याय 1 और पद 2 में, पौलुस अपने पाठकों, कुरिन्थियों के पाठकों को, कुरिन्थ में परमेश्वर की कलीसिया के रूप में, मसीह यीशु में पवित्र किए गए लोगों को संबोधित करता है और उनके पवित्र लोग होने के लिए बुलाया जाता है।

इसलिए, मसीह से संबंधित होने के कारण, हम पहले से ही अलग हो चुके हैं। हम पहले से ही पवित्र, अलग या पवित्र बनाए जा चुके हैं। पौलुस की अधिकांश पत्रियाँ संतों के संदर्भ से शुरू होती हैं।

यह किसी ऐसे व्यक्ति का पदनाम नहीं है जो संतत्व या पवित्रता के एक निश्चित स्तर पर पहुँच गया है। यह एक ऐसा शब्द है जो परमेश्वर के सभी लोगों को संदर्भित करता है, जैसे कि मसीह में, अलग रखा जाना और पवित्र बनाया जाना। शाब्दिक रूप से, इसका अनुवाद पवित्र लोगों के रूप में किया जा सकता है।

1 कुरिन्थियों अध्याय 6 और पद 11 आगे बढ़ने के लिए। अध्याय 6 और पद 11। परन्तु तुम हमारे परमेश्वर के आत्मा से प्रभु यीशु मसीह के नाम से धोए गए, पवित्र हुए और धर्मी ठहरे।

मुझे नहीं लगता कि ये तीनों, आप धोए गए, पवित्र किए गए, और धर्मी ठहराए गए, उन चीजों को संदर्भित कर रहे हैं जो कालानुक्रमिक या तार्किक क्रम में होती हैं। ये सिर्फ़ तीन तरीके हैं जो बताते हैं कि मसीह में परमेश्वर के लोगों के साथ क्या हुआ है। उन्हें धर्मी ठहराए जाने के साथ-साथ पवित्र भी किया गया है।

अर्थात्, उन्हें अलग रखा गया है और पवित्र बनाया गया है। 2 थिस्सलुनीकियों अध्याय 2 और पद 13। पवित्रीकरण यहाँ स्पष्ट रूप से पवित्र आत्मा के कार्य के साथ जुड़ा हुआ है।

2 थिस्सलुनीकियों अध्याय 2 और पद 13. लेकिन हमें, आप, हमेशा तुम्हारे लिए परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए, भाइयों और बहनों, जो परमेश्वर से प्यार करते हैं क्योंकि परमेश्वर ने आपको आत्मा के पवित्र कार्य और सत्य पर विश्वास के माध्यम से उद्धार पाने के लिए पहले फल के रूप में चुना है। तो, यह पवित्र आत्मा है जो अब हमें वर्तमान में पवित्र करता है।

अर्थात्, हमें पवित्र और पृथक होने के क्षेत्र में रखा गया है। इसलिए, पुराने नियम की पवित्रता की भाषा अब मसीह में विश्वास करने वालों पर लागू होती है। 2 थिस्सलुनीकियों 2 पद 13 का अंश भी यह सुझाव देता प्रतीत होता है कि यह एक सतत प्रक्रिया है जिसे परमेश्वर अपनी पवित्र आत्मा के माध्यम से पूरा करता है।

हम नए नियम में अन्यत्र पाते हैं कि पवित्रीकरण का अर्थ है परमेश्वर द्वारा लोगों को अलग करना, उन्हें पवित्र बनाना। फिर से, ऐसे बहुत से ग्रंथ हैं जिनकी ओर हम संकेत कर सकते हैं, लेकिन हमारे पास ऐसा करने का समय नहीं है। लेकिन एक दिलचस्प ग्रंथ 1 थिस्सलुनीकियों अध्याय 4 और पद 8 है। 1 थिस्सलुनीकियों 4 और पद 8। इसलिए, आइए देखें, मुझे वापस जाने दें।

यह श्लोक 3 है, वास्तव में श्लोक 3 से 8 तक। 1 थिस्सलुनीकियों 4:3 से 8। यह परमेश्वर की इच्छा है कि तुम पवित्र बनो और तुम यौन अनैतिकता से दूर रहो। और फिर यह समाप्त हो जाता है; इसलिए, जो कोई भी इस निर्देश को अस्वीकार करता है वह मनुष्यों को नहीं, बल्कि परमेश्वर को अस्वीकार करता है, वही परमेश्वर जो तुम्हें अपनी पवित्र आत्मा देता है। तो एक बार फिर, श्लोक 3 में यह पवित्रीकरण परमेश्वर द्वारा हमें अपनी पवित्र आत्मा देने से जुड़ा हुआ है।

लेकिन मैं चाहता हूँ कि आप ध्यान दें, दिलचस्प बात यह है कि पौलुस अब कामुकता को भी पवित्रता के दायरे में रखता है। इसलिए, पवित्रता परमेश्वर के लोगों के पूरे जीवन तक फैली हुई है। हम अन्य ग्रंथों को देख सकते हैं।

1 कुरिन्थियों अध्याय 5, जहाँ चर्च को संभवतः एक अनैतिक भाई को पवित्र मंदिर के रूप में चर्च की पवित्रता के लिए निष्कासित करना है, पवित्रीकरण और पवित्रता के संदर्भ को ग्रहण करता है। हम पवित्र जीवन जीने की आवश्यकता के लिए कई अन्य संदर्भों को आसानी से शामिल कर सकते हैं, भले ही पवित्रीकरण शब्द का हमेशा उपयोग नहीं किया जाता है। आज्ञाकारिता और पवित्रता का अनुसरण करने की आवश्यकता निश्चित रूप से पवित्रीकरण, अलग और पवित्र होने को ग्रहण करती है।

हालाँकि, हम नए नियम में यह भी पाते हैं कि पवित्रीकरण एक भविष्य की वास्तविकता है। इफिसियों अध्याय 5 और आयत 25 से 27। पौलुस द्वारा पति और पत्नी के बीच के रिश्ते की तुलना कलीसिया में मसीह के रिश्ते से करने के संदर्भ में, वह 5, 25 से 27 में यह कहता है।

पतियों, अपनी पत्नी से वैसे ही प्रेम करो जैसे मसीह ने कलीसिया से प्रेम किया और उसके लिए अपने आपको दे दिया, ताकि उसे पवित्र बनाया जा सके, वचन के जल के स्नान से उसे शुद्ध किया जा सके, और उसे एक चमकती हुई कलीसिया के रूप में अपने सामने पेश किया जा सके, जिसमें कोई दाग या झुर्री या कोई अन्य दोष न हो, बल्कि पवित्र और निर्दोष हो। फिर से, पवित्रीकरण की भाषा अभी-तक-संदर्भ में नहीं है जहाँ वर्तमान वास्तविकता यह है कि कलीसिया को पाप से निपटने के लिए यीशु मसीह की मृत्यु के द्वारा धोया और पवित्र किया जा रहा है। लेकिन फिर से, पद 26 इसे एक युगांतिक झुकाव देता है, जिसका उद्देश्य यह है कि अंततः, परमेश्वर कलीसिया को अपनी दुल्हन के रूप में, पवित्र और निर्दोष के रूप में उसके सामने पेश करेगा, जहाँ पवित्रीकरण, अलग करने और पवित्र बनाने की प्रक्रिया अंततः पूरी हो जाती है।

कुलुस्सियों अध्याय 1 और पद 22 भी, कुलुस्सियों 1:22, पर अब उसने अपनी शारीरिक देह की मृत्यु के द्वारा तुम्हारा मेल कर लिया, कि तुम्हें अपने सम्मुख पवित्र, निष्कलंक और निर्दोष बनाकर उपस्थित करे। तो, पूरा, फिर से, पुराने नियम में पवित्रता और अलग किए जाने का यह विषय अब नए नियम में परमेश्वर के लोगों को मसीह यीशु में अलग और पवित्र किए जाने में अपनी पूर्ति पाता है, पहले से ही मसीह में होने के कारण, लेकिन उस समय की प्रत्याशा में जब परमेश्वर के लोग अंततः पाप से अलग हो जाएंगे, पाप हटा दिया जाएगा, और परमेश्वर के लोग उसके सामने पवित्र और निष्कलंक होंगे। 1 थिस्सलुनीकियों अध्याय 5, 1 थिस्सलुनीकियों 5:23 और 24।

शांति का परमेश्वर आप ही तुम्हें पूरी रीति से पवित्र करे। तुम्हारी आत्मा, प्राण और देह हमारे प्रभु यीशु मसीह के आने पर निर्दोष ठहरें। तुम्हारा बुलानेवाला सच्चा है, और वह ऐसा ही करेगा।

की भाषा, हालाँकि यह ईश्वर द्वारा हमें पवित्र करने का संदर्भ हो सकता है, जो हमें पवित्र बना रहा है और वर्तमान में हमें अलग कर रहा है, संभवतः 23 को, 23 और 24 को, हमारे युगांतिक पवित्रीकरण या अभी तक नहीं के संदर्भ में समझा जाना चाहिए। इसलिए, पौलुस ने पवित्रता और पवित्रीकरण की पुराने नियम की भाषा को एक व्यक्ति को अलग करने, एक व्यक्ति को पवित्र बनाने के रूप में लिया है, और अब उस भाषा का उपयोग उन विश्वासियों को संदर्भित करने के

लिए करता है जो अब उस क्षेत्र के भीतर हैं जो पवित्र है और जो अलग रखा गया है। हम पहले से ही अलग रखे गए हैं।

हम पहले से ही पवित्र हैं। धर्मशास्त्रियों की भाषा में कहें तो हम पवित्र हैं। हम अभी भी अलग होने और पवित्र होने की प्रक्रिया में हैं, लेकिन परमेश्वर एक दिन हमें पूर्ण करेगा और हमें पाप से पूरी तरह अलग करेगा और हमें अपनी उपस्थिति और अपनी दृष्टि में पवित्र बनाएगा।

इसलिए, पवित्रीकरण एक और महत्वपूर्ण बाइबिल धर्मशास्त्रीय विषय है जो बताता है कि आने वाले उद्धार के पुराने नियम के वादों की पूर्ति में परमेश्वर हमारे लिए क्या पूरा करता है। पवित्रीकरण उद्धार के उन आशीषों में से एक है जो परमेश्वर नए नियम की पूर्ति में मसीह में अपने लोगों के लिए प्रदान करता है। हमारे उद्धार से संबंधित एक और महत्वपूर्ण विषय, लेकिन एक जिसका मैं संक्षेप में उल्लेख करूँगा क्योंकि हम पहले ही दो खंडों में इसके बारे में विस्तार से बता चुके हैं, और वह है हमारे उद्धार की कल्पना करना और उसे एक नए पलायन के रूप में चित्रित करना।

यह वास्तव में छुटकारे से संबंधित है। शायद मैं इस पर एक रिश्ते में चर्चा कर सकता था और करनी भी चाहिए थी, और मैंने इसका उल्लेख भी किया, लेकिन मैं छुटकारे के विषय के संबंध में इस पर चर्चा कर सकता था। इसलिए, हम पहले ही इस पर एक महत्वपूर्ण धार्मिक विषय के रूप में चर्चा कर चुके हैं, लेकिन महत्वपूर्ण बात यह है कि नया नियम हमारे उद्धार को पहले वाले के बाद एक नए पलायन के रूप में चित्रित करता है।

इसलिए, जिस तरह से परमेश्वर ने अपने लोगों को मिस्र की गुलामी से छुड़ाया और उन्हें उनकी विरासत में लाया, उसी तरह एक बार फिर, हम नए नियम में लेखकों को एक नए पलायन का वर्णन करते हुए पाते हैं जहाँ परमेश्वर अपने लोगों को छुड़ाता और बचाता है। वह उन्हें पाप और बुराई के बंधन से छुड़ाता है और उन्हें अपने राज्य में लाता है, अपने प्यारे बेटे के राज्य में, कुलुस्सियों अध्याय 1 और आयत 12 और 13, और हमें हमारी विरासत में लाता है। फिर से, मैं इन ग्रंथों को नहीं पढ़ूँगा, लेकिन कुलुस्सियों अध्याय 1, आयत 12 से 13, गलातियों अध्याय 4, आयत 1 से 7 पलायन की भाषा के साथ प्रतिध्वनित होती है।

रोमियों 8, श्लोक 14 से 17, निर्गमन भाषा के साथ प्रतिध्वनित होते हैं। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक ने पहले निर्गमन और यशायाह से नए निर्गमन रूपांकन दोनों से निर्गमन भाषा के नए नियम के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हमने प्रकाशितवाक्य के साथ देखा कि परमेश्वर ने पहले ही हमें छुड़ा लिया है और हमें याजकों का एक राज्य बना दिया है, नए निर्गमन के संदर्भ में प्रकाशितवाक्य अध्याय 1, श्लोक 5 और 6।

लेकिन हमने प्रकाशितवाक्य 21 और 22 में नई सृष्टि के साथ देखा कि परमेश्वर अपने लोगों को पाप के बंधन और दासता से मुक्त करके, और शायद प्रकाशितवाक्य में एक विदेशी उत्पीड़क, यानी रोमन साम्राज्य के बंधन और दासता से मुक्त करके, उस नए पलायन को उसकी पूर्णता और उसके पूर्ण लक्ष्य तक पूरा करता है, और उन्हें उनकी विरासत, नई सृष्टि में लाता है। अंतिम विषय जिस पर मैं संक्षेप में विचार करना चाहता हूँ, हमारे उद्धार का संदर्भ देते हुए, मसीह के

साथ एकता है, उद्धार को यीशु मसीह के साथ हमारी एकता के संदर्भ में समझा जाता है। यदि आप इसे और अधिक जानना चाहते हैं, तो सबसे महत्वपूर्ण पुस्तकों में से एक, जो हाल ही में प्रकाशित हुई है, वह कॉन्स्टेंटाइन कैम्बेल द्वारा है, जो अब संयुक्त राज्य अमेरिका में शिकागो में ट्रिनिटी इवेंजेलिकल डिविनिटी स्कूल में प्रोफेसर हैं।

उनकी पुस्तक का नाम है मसीह के साथ मिलन, जो पॉल की मसीह के साथ मिलन भाषा का बाइबिल, धर्मशास्त्रीय और व्याख्यात्मक विकास है। अर्थात्, हमारा उद्धार यीशु मसीह के साथ मिलन और उनकी पहचान में पूरा होता हुआ देखा जाता है। यह मसीह की भाषा में पॉल के पत्रों में व्यक्त किया गया है।

बार-बार, आप उसमें होने, मसीह में होने की इस भाषा को पाते हैं। इफिसियों अध्याय 1 इसका एक प्रमुख उदाहरण है, जो पद 4 से शुरू होता है। क्योंकि उसने हमें जगत की रचना से पहले, मसीह में, अपने सामने पवित्र और निर्दोष होने के लिए चुना। प्रेम में, उसने हमें अपनी इच्छा की इच्छा और अपने अनुग्रह की प्रशंसा और महिमा के अनुसार गोद लेने के लिए पहले से ही नियुक्त किया।

उसमें, अर्थात् मसीह में, हमें उसके लहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात् पापों की क्षमा, परमेश्वर के उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है, जो उसने हम पर उदारता से बरसाया। उसने अपनी इच्छा का भेद बुद्धि और समझ के साथ हमें बताया, उस भले अभिप्राय के अनुसार जो उसने मसीह में ठाना था, कि जब समय उसके द्वारा पूरे हों, तब वे पद 11 में प्रभावी हों। हम भी चुने हुए हैं, और पहले से ठहराए गए हैं।

मैं यहीं रुकूंगा, लेकिन आपको इसका अर्थ समझ में आ गया होगा: मसीह में होने की भाषा, मसीह के साथ जुड़े होने की भाषा। हम बार-बार पौलुस की अभिव्यक्ति पाते हैं कि मसीह के साथ एक होने से उद्धार होता है। रोमियों अध्याय 6 और आयतें 3-8, इफिसियों अध्याय 2:5-6, कुलुस्सियों 2:12-13, सभी पाठ जो हम पहले ही पढ़ चुके हैं, इस तथ्य का वर्णन करते हैं कि हम पाप के लिए मर चुके हैं, हमने मसीह के पुनरुत्थान, इस वर्तमान बुरे युग की शक्तियों से जुड़ने के कारण नई सृष्टि के युगांतिक पुनरुत्थान जीवन का अनुभव किया है।

मसीह की मृत्यु से जुड़ने के कारण पाप और इस युग की शक्तियों के लिए मरकर हम उनसे बचाए गए हैं। मैं समझता हूँ कि मसीह की भाषा का अर्थ संभवतः, अधिकांश समय, मसीह के प्रभाव में होना और मसीह के नियंत्रण के दायरे में होना है। यह उस क्षेत्र को संदर्भित करता है जिससे हम संबंधित हैं और मसीह उसका मुखिया है।

जैसा कि हमने कहा, शायद हमें पुराने मनुष्य और नए मनुष्य की भाषा को इसी तरह समझना चाहिए, इफिसियों 4:22 और 24, और कुलुस्सियों 3, 9, और 10। पुराना मनुष्य वह होगा जो हम आदम में हैं, आदम के प्रभाव और नियंत्रण के अधीन, इस वर्तमान युग से संबंधित हैं। नया मनुष्य वह है जो हम मसीह में हैं, मसीह के प्रभाव और नियंत्रण के क्षेत्र में उद्धार के नए युग से संबंधित हैं।

दूसरे शब्दों में, वे दो क्षेत्रों, दो युगों को संदर्भित करते हैं जिनसे हम संबंधित हैं, और उनके संबंधित प्रमुख, आदम और मसीह। ये इफिसियों और कुलुस्सियों दोनों में पौलुस के नैतिक उपदेशों का आधार बन जाते हैं। इसलिए, हमारा उद्धार अंततः मसीह के साथ हमारी एकता द्वारा पूरा होता है।

हम मसीह में होने और मसीह के साथ एक होने के द्वारा उद्धार के आशीर्वाद का अनुभव करते हैं। इसलिए, निष्कर्ष में, पौलुस ने, विशेष रूप से पौलुस का, लेकिन अन्य नए नियम के लेखकों का भी उपयोग किया। पौलुस ने परमेश्वर के अंतिम समय के उद्धार को संदर्भित करने के लिए विभिन्न प्रकार की छवियों का उपयोग किया है जिसका उद्घाटन अब यीशु मसीह के व्यक्तित्व में किया गया है। आदम और हवा के लिए अपने मूल इरादे को बहाल करने और इस्राएल को बचाने में सृष्टि को बहाल करने में अपने लोगों को उद्धार लाने के लिए कार्य करने वाले परमेश्वर के पुराने नियम के वादों की पूर्ति।

अब, यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान ने परमेश्वर के लोगों के लिए अंतिम समय में उद्धार को पूरा कर दिया है।

यह डॉ. डेव मैथ्यूसन द्वारा न्यू टेस्टामेंट थियोलॉजी पर अपने व्याख्यान श्रृंखला में दिया गया है। यह उद्धार पर सत्र 27, भाग 2 है।